आपनार माफी आमार के मिलबो की ना!

मिसेस दास के पॉव छूकर, जयशंकर से गले मिल कर मै अपनी सीट पर जा बैठा। मिसेस दास अपने पल्ले से अपनी ऑखें पोछे जा रही थी। मेरी भी ऑखें नम हो गई। जयशंकर अपने दोनो ओंठ दबाए खड़ा था, पर उसके नथुने कॉप रहे थे। धीरे धीरे मेरी ट्रेन गौहाटी जंक्शन के प्लेटफार्म नम्बर दो पर सरकने लगी। मै अपनी डबडबाई ऑखो से उन्हे ओझल होता देखता रहा।

पच्चीस वर्ष होने को आए। मिसेस दास और जयशंकर को मैने सैकड़ों पत्र डाले, अपने पत्रों मे मै गिड़गिड़ाया रोया कलपा, पर मुझे मेरे एक पत्र का भी जवाब न मिला। इन दोनो ने मुझे माफ न किया। बस एक आशा रह रहकर मुझे सान्तवना देती रही कि जयशंकर श्रवण की तरह जी जान से अपनी मॉ की सेवा मे लगा होगा और अकेला उनकी ममता की बौछार मे नहा रहा होगा। मेरे लिए मिसेस दास की निर्ममता न टूटी। इन्हे मैने स्वयम खोया, अपनी एक गलती की वजह से, अपनी एक झूठ की वजह से जिसे ये माफ न कर पाए। मै उन्हे नियमित रूप से पत्र डालता रहा और उन्हे अपने बारे मे सबकुछ बताता रहा, मै कहॉ हूँ और क्या कर रहा हूँ।

एक जिद़ मैने भी पकड़ ली। एकबार मै मिसेस दास से मिलकर ही रहूँगा। आसाम छोड़ने के बाद कई शहर मेरे जीवन मे आए, बनारस इलाहाबाद लखनऊ, दिल्ली, देहरादून फिर मास्को और अन्त मे बर्लिन। इन पच्चीस वर्षो मे मुझसे सैकड़ो लोग टकराए। यहॉ तक कि कई मेरा मन और मेरी आत्मा तक छू गए, लेकिन मिसेस दास को मै न भूल सका। वो मेरी ऑखे हमेशा नम करती रही। उनकी याद को मेरे जीवन की कोई भी व्यस्तता बोझिल या अस्पष्ट न कर सकी।

सन अन्ठानबे बारह अप्रील को मै छ सप्ताह की छुट्टी लेकर एस ए एस के एक विमान से दिल्ली उड़ चला। मॉ की तबीयत खराब चल रही थी। दिल्ली से बाबतपुर के प्लेन का टिकट बर्लिन से कनफर्म होने के बावजूद भी न स्वीकारा गया और मुझे एक सप्ताह के बाद एक सीट दी गई। मै दिल्ली मे ओल्ड रेल्वे स्टेशन पर जाकर गौहाटी मेल मे एक फर्स्ट क्लास के डिब्बे मे अपनी रिजर्वेशन करवा ली और चल पड़ा मिसेस दास से मिलने। मै एक बार स्वयम उनके मुँह से अपना तिरस्कार सुनना चाहता था। शायद वो मुझे अपने घर मे घूसने न दें या फिर मुझे पहचानने से इन्कार कर दें, पर मै एक बार उनसे मिलना चाहता था।

मै गोहाटी मेडिकल कॉलेज मे अपना एडमिशन फार्म जमा करवाने गया हुआ था। ये मेरी गौहाटी की पहली यात्रा थी। मै वहॉ रूकने के ख्याल से गया भी न था। बस मुझे अपना फार्म जमा करवा कर वापस लौट जाना था। अचानक मेरा बटुआ खो गया या किसी ने निकाल लिया। उसी मे मेरे सारे पैसे थे। यहॉ तक कि लॉक रूम की रसीद भी। मेरी तो टॉगे ही कॉपने लगी। सुबह से मै कुछ खाया भी न था, ऊपर से ये लम्बी यात्रा। मै प्लेटफार्म की एक बैंच पर सर पकड़ के बैठ गया। बाबूजी की दी गई पुरानी स्विश घड़ी मेरी एकमात्र पुंजी थी। इस परदेश मे कौन मेरी बातों पर भरोसा करेगा! मुझे कोई भी रास्ता सूझ न रहा था। कोई रास्ता होता तब तो सूझता। रह रहकर पिताजी याद आते। उनका कहा मैने क्यों नही माना। दसों बार वो कहे, सारे पैसे बटुए मे न रखना। थोड़ा सूटकेस मे, थोड़ा इस जेब मे, थोड़ा उस जेब मे, लेकिन नही। मै मन ही मन अपने को गरियाए जा रहा था, तभी एक आसामी लड़का मेरे पास समय पूछने आया। मैने अपनी कलाई ही उसकी ओर बढा दी। वो स्टेशन पर किसी को लेने आया था। वो मेरे बगल मे ही बैठ गया। थोड़ी देर तक तो वो चुप रहा, फिर आसामी मे अपना परिचय देकर मुझे कुरेदने लगा, मै कहॉ से हूँ, गौहाटी मे क्या कर रहा हूँ इत्यादि इत्यादि। मै थोड़ी बहुत बंगाली समझ और बोल भी लेता था। मैने संक्षिप्त मे उसे अपना संकट सुना डाला। उसने कोई भी प्रतिक्रिया न दिखाई। इसकी मुझे अपेक्षा भी न थी। वो एक आसामी पत्रिका खोलकर पढने लगा। फिर उसी ने अपना मौन तोड़ाः धनबाद तक का किराया भी तो काफी होगा!

मुझे बड़ी राहत मिली कि कम से कम ये लड़का मुझपर भरोसा तो किया। सौ रूपये सुनकर वो चौंका और फिर अपनी पत्रिका पढने लगा। फिर उसने अपना मौन तोड़ाः ये तो बहुत पइसा है। इतना हमारा सार्मथ्य नही है। लेकिन तुम अपना जी छोटा न करो। मॉ को आने दो। उनसे बात करेंगे। फिर वो अपनी पत्रिका अपनी जेब मे ठूँसा और अपने और अपने परिवार के बारे मे बिना किसी लाग लपेट के बताने लगा। मै उसके लिए कोई अजनबी न था उसका कोई सगा थाः मेरे चाचा गौहाटी के एक जाने माने सर्जन हैं, पर बाबा के गुजरने के बाद उन्होने हमसे अपने सारे सम्बन्ध तोड़ लिए। मेरे बाबा एक प्राइमरी स्कूल मे टीचर थे। जब वो गुजरे, मेरी उम्र ग्यारह साल की थी। बाबा मे बड़ा आत्म सम्मान था। वो मेरे चाचा से कभी एक कौड़ी तक के लिए भी कभीं हॉथ न पसारे। सगे सम्बन्धी के नाम पर मेरे पास बस एक विधवा निःसंतान मौसी हैं, जो तिनसुकिया मे रहती हैं। मॉ उन्ही से मिलने गई हैं। मेरी एटलस सायकल मौसी ने ही खरीदी है। घर का चावल भी मौसी के यहॉ से आता है। मेरी मॉ बी ए पास हैं। बाबा के गुजरने के बाद उन्हे उसी स्कूल मे नौकरी मिल गई। मै बी एस सी पार्ट वन मे हूँ। मॉ के पास एक दो कमरे का मकान और मेरे अलावे और कुछ भी नही है। तभी वो असहज हो गया। एक ट्रेन आने वाली थी। वो बिना मुझसे कुछ कहे उठ पड़ा। उसकी अधीरता मुझसे छुपी न थी। ट्रेन के आते ही प्लेटफार्म पर ऐसी रेल पेल मची कि ये लड़का मेरे ऑखो से ओझल ही हो गया। पन्द्रह मिनट तक ये ट्रेन प्लेटफार्म पर रूकी रही। मुझे वो कहीं नजर न आया। ट्रेन के जाने के बाद थोड़ी भींड़ छटी। अचानक ये लड़का अपनी मॉ के संग मेरे सामने खड़ा था। मै उठकर उनके पॉव छूआ। उन्होने धीरे से मेरा सर सहलाया और बस इतना ही कहाः जयशंकर बता रहा था कि तुम्हारी सूटकेस लॉक रूम मे है, जिसकी रसीद भी तुम गुम कर चुके हो। सूटकेस का रंग तो तुम्हे याद है न!

मै उनके साथ लॉक रूम मे गया। अपना पता लिखबाकर वो जिरह बहस करके मेरा सूटकेस निकलवा लाई। स्टेशन के सायकल स्टैंड पर जयशंकर की सायकल खड़ी थी। वो अपनी सायकल की कैरियर पर मेरा सूटकेस लाद लिया। मै उसकी मॉ का झोला अपने कन्धे से लटका लिया। दिन के तीन बज रहे थे। गर्मियो के दिन थे। गौहाटी भट्टी की तरह तप रही थी। हम पैदल घर की तरफ चल पड़े।

दूसरे बड़े शहरों की तरह गौहाटी भी बड़े भागा दौड़ी वाला शहर है। रिक्सों की तो यहॉ भरमार सी थी। पिक्चर हॉल भी यहॉ हर कोने पर था जिनमे ज्यादेतर हिन्दी फिल्मे चल रही थीं। गाड़ी, टेम्पो, टेक्सी, कुली, मजदूर, रेस्त्रॉ, होटल्स, बड़ी बड़ी बिल्डिंगे, भिखमंगें सबकुछ यहॉ था। बड़े बड़े विज्ञापनो के बैनर्स, सड़को पर लोगों की रेल पेल, धक्कम धुक्का, सभी को किसी न किसी बात की जल्दी थी। समय किसी के पास न था। हम तीनो पसीने से नहाये आगे बढे जा रहे थे। आगे आगे जयशंकर एक हाथ से सायकल का हैन्डल दूसरे से मेरा सूटकेस सम्हाले, पीछे पीछे मै और उसकी मॉ। जयशंकर का घर आने का नाम ही न ले रहा था। रास्ते भर उसकी मॉ ने मुझसे एक शब्द तक न कहा। जयशंकर मुझे बता चुका थाः मेरी मॉ सोचती बहुत हैं, बोलती बहुत

कम है।तुम इसे सहज लेना।
काले बार्डर की सफेद साड़ी, बन्द गले की सफेद ब्लाउज, काले रंग की चप्पल व काले फ्रेम के चश्मे और एक मामूली सा थैला कन्धे से लटकाए रास्ते भर मै जयशंकर की मॉ के लिए एक नाम ढूँढता रहा।उनके लिए मिसेस दास से उपयुक्त मुझे कोई दूसरा नाम न सूझा।
स्टेशन के समीपवर्ती इलाको का कोलाहलपन थोड़ा कम हो चला था, बस रास्ता खत्म होने को न आ रहा था।आखिरकार हम एक छोटी सी बस्ती मे पहुँचे।वहॉ भी छोटे मोटे दुकानो की भरमार सी थी, पर इतना शोर गूल न था।इसी बस्ती मे मिसेस दास का घर था, जिसके ईटो पर पलस्तर तक न था।कहने को तो ये पक्का घर था, पर ये मिसेस दास के पति के सपने का एक अधूरापन था, जिसे वो पूरा करवाने से पहले अपनी हिम्मत हार गए।उनके सपने को पूरे करने का सामर्थ्य मिसेस दास मे न था।घर का मरम्मत वर्षो से न हो पाया था।छतों पर दरारे पड़ी हुई थीं।कई जगहों से फर्श भी टूट चली थी।सामने वाले कमरे मे एक चौकी, एक सन्दूक, एक मेज और दो फोल्डिन्ग कुर्सिया थी।पीछे वाले कमरे मे एक बॉस की चारपाई और दीवार से लगी एक आलमारी थी, जिसके सामने एक हरे चारखाने का परदा लटक रहा था।ये कमरा अपेक्षाकृत थोड़ा ठंढा था।दोनो कमरे बेहद साफ सूथरे थे।दरवाजो और खिड़कियों पर भी हरे चारखाने के परदे लटक रहे थे।इन दो कमरों के अलावे इनके पास एक और छोटा सा कमरा था, जिसमे घर के राशन बड़े करीने से सजे पड़े थे।लैट्रिन और बाथरूम मिला हुआ था।मुझे वहीं एक नलका दिखा।दिन भर मे बस दो बार ही नलके मे पानी आता था, वो भी बस दो घन्टे के लिए।नहाने वाले कमरे मे दो टीन के बड़े टब, एक प्लास्टिक की मग और लकड़ी का एक पीढा था।प्लास्टिक की एक अरगनी पर दो तौलिये और कुछ धूले कपड़े लटक रहे थे।घर के सामने एक लम्बा बरामदा था, जो कच्चा था, पर इसकी छत पक्की थी।इसके एक छोर पर दो चौकिया लगी हुई थी।दूसरे छोर पर मिसेस दास खाना बनाती थीं।सामने वाले कमरे की खिड़की पर दो सुराहियॉ पानी से लबालब भरी पड़ी थीं।मिसेस दास ने मुझे एक तौलिया पकड़ाते हुए हॉथ मुह धोने को कहा।जब मै बाथरूम से बाहर निकला तो सन्दूक पर एक स्टील की थाली मे चार छ लड्डू और मुट्ठी भर मठरी और दो ग्लास मे सुराही का ठंढा पानी देखते ही मेरे जान मे जान आ गई।बड़ा आदेशात्मक स्वर था मिसेस दास काःतुम जयशंकर के साथ थोड़ा नाश्ता कर लो फिर उसके साथ बाजार चले जाना।जो सब्जी तुम्हे अच्छी लगे, ले आना।तब तक मै खाने की तैयारी करती हूँ।
गौहाटी की तपिश थोड़ी कम हो चली थी।हमे खरीददारी के लिए दो रूपये मिले।नाश्ता करने के बाद मै जयशंकर के साथ बाजार चल पड़ा।जयशंकर को मोल भाव करना आता था।इन दो रूपयों मे वो टमाटर, लौकी, नेनुआ, आलू, प्याज और पता नही क्या क्या खरीद डाला और साथ मे दो चारमीनार की सिगरेटें भीःमॉ को तो नही बोलोगे! बस यही एक व्यसन है मुझे।मॉ नही जानती।जान से मार डालेगी मुझे।बाजार मे मुझे बड़ा मोल भाव करना पड़ता है इस व्यसन के लिए।मॉ जब सो जाएगी, तब बरामदे मे तुम भी एक दो कश टान लेना।यार इस गौहाटी मे तो बुतरू लोग दारू तक टानते हैं।
हमारे वापस लौटने तक मिसेस दास पूरे बरामदे की सफाई कर के पानी का छिड़काव कर चुकी थीं।दोनो चौकियों पर दरिया बिछी हुई थी।मिसेस दास एक गैस के स्टोव पर चाऊल बना रही थीं।घर वापस आते ही जयशंकर अपने मॉ को रसोई मे मदद करने लगा।आज शाम के खाने पर आलू और लौकी की सब्जी बन रही थी।जयशंकर सामने वाले कमरे मे एक दरी बिछा आया था, जिसपर तीन थालियॉ, तीन ग्लासें और एक सुराही रखकर वो मुझे बुलाने बरामदे मे आया।मै दरी पर जयशंकर के साथ पालथी मार कर बैठ गया।मिसेस दास सारा खाना लेकर कमरे मे आई और हमारे सामने अपने पैर पीछे की तरफ मोड़ कर बैठ गई।खाने के मामले मे जयशंकर के पास सब्र बिल्कुल न था।उसे अपने उँगलियों तक के जलने की परवाह न रहती थी।वो अपनी थाली भरकर खाना शुरू कर दिया।मेरी थाली मिसेस दास ने ही परोसी, पर जब तक वो अपने थाली मे खाना न डालीं, मै इन्तजार करता रहा।वो जयशंकर को घूरे जा रही थीं, पर उसे इन बातों की परवाह न थी।हम अभीं खाना शुरू भी न किये थे कि वो फिर अपनी थाली भर लिया।हम उसकी शू शू और भालो लागछे सुनते जा रहे थे।हमारे सिर के ऊपर बाबा आदम के जमाने का एक पंखा घरघरा रहा था।खाने के दौरान ही मिसेस दास ने कहना शुरू कियाःहमलोग गरीब आदमी हैं।बस गौहाटी मे अपनी इज्जत ढंके बैठे हैं।सौ दो सौ रूपये का सामर्थ्य हमारे पास नही है।मुझे दीदी को लिखना होगा।पैसे आने मे शायद आठ दस दिन लग जाय।तुम कल सुबह जयशंकर के संग जाकर अपने घर पर एक टेलीग्राम डाल दो, वरना तुम्हारे माता पिता फिकर करेंगे।
मेरा मन भर आया।सहज होते ही मैने उनसे कहा कि इतने दिनो मे तो मेरे घर से भी पैसे आ जाएगे।आप अपनी दीदी को कुछ न लिखें।बस बार बार यही सोचता हूँ कि मै आठ दस दिन आप पर बोझ बना रहूँगा।
ःतुम ऐसा क्यों सोचते हो!जो रूखा सूखा हम खाते हैं, तुम्हारे साथ खा लेंगे।बरामदे मे दो चौकिया हैं।जयशंकर गर्मी की वजह से बरामदे मे ही सोता है।मै तुम्हारा बिस्तर उसी के साथ लगा दूँगी।
दूसरे दिन सुबह नहा धोकर मै जयशंकर के साथ पोस्टऑफिस चला गया।मैने घर पर एक टेलीग्राम डाल दिया।जब हम वापस आए, मिसेस दास बरामदे मे खाना बना रही थीं।मैने उनके हॉथ पर टेलीग्राम की रसीद और शेष पैसे धर दिये।मिसेस दास सुबह का खाना थोड़ा ज्यादे बनाती थीं।उन्हे स्कूल मे दस बजे से चार बजे तक रहना पड़ता था, लेकिन जयशंकर दोपहर मे ही घर वापस आ जाता था।सुबह का बचा खाना ढँक तोपकर वो स्कूल चली जाती थीं, जो मै जयशंकर के साथ खाता था।बाजार से घर मे बस एक पाव दूध और सब्जियॉ आती थीं।सुबह और शाम की चाय के अलावे इस परिवार मे दो वक्त खाना बनता था, जिसमे उसना चावल और रस्सेदार सब्जी मूख्य होती थी।रोटी दाल, सूखी सब्जी या सलाद का इस परिवार मे कोई रिवाज ही न था।मै इस परिवार मे कुल छह दिन रहा।एक बार मिसेस दास ने मान्सो बनाया और एक बार मछली।मान्सो के नाम पर मुझे एकाध पीस मीट का रस्से मे कहीं तैरता टकराया वरना तेजपत्ता ही तेजपत्ता।मछली के नाम पर बस सरसो की सूप।मिसेस दास खाना बड़ा झाल बनाती थीं।मान्सो और माछ जयशंकर की कमजोरिया थीं।खाते वक्त वो दोनो बार मिसेस दास की डॉटे सुनाःतुम सज्जन पुरूष की तरह खाना नही खा सकते!शू शू ऊपर से जानवरो की तरह चपड़ चपड़।तुम्हे कभी किसी अच्छे घर की बोदी नही मिलेगी।जयशंकर का मुँह खाने से भरा था फिर भी वो जबाब देने से बाज न आयाःमॉ मै पागल नही हूँ जो शादी करूँगा।
ःक्यों तुम्हारे बाबा पागल थे क्या!

जयशंकर बहस मे नही पड़ना चाहता था।पहले वो मुझसे पूछाःतुम्हे कुछ चाहिये!मेरे मना करते ही वो शेष खाना अपनी थाली मे लेकर खाने लग पड़ा।अपनी माँ से वो पूछा तक नही।वो उनका खुराक जानता था।अब उसकी माँ भभकीःजब तक हम खा पी कर उठ नही जाते.तुम अपनी जगह से हिलोगे नही।हम अभी दो कौर अपने मुँह मे डाले नही और तुम बर्त्तन माँजने बैठ जाते हो।धीरे धीरे नही खा सकते!

एक दिन शाम को जयशंकर ही मुझे बतायाःबाबा के गुजरने के बाद मेरे चाचा एक बार शादी का प्रस्ताव लेकर माँ के पास आए पर माँ ने उसे ठुकरा दिया ःमेरे पास जयशंकर है.जिसे मै बस उसके बाबा के साथ बाँट सकती हूँ और किसी के साथ नही।जयशंकर को अगर आप मार्गदर्शन दे सकते हैं तो दें.वरना फिर मुझे ही सबकुछ देखना होगा।मै अपने पति की आड़ मे उसे एक ऐसा मानुष बनाऊँगी कि उसे दुनिया याद करेगी।

मिसेस दास का असली नाम मनीषा मुखर्जी था और उनके पति का प्रणव दास।जब मै उनसे मिला था.तब मेरी उम्र इक्कीस साल की थी और वो बयालीस वर्ष की थीं।

गौहाटी मेल गौहाटी की तरफ रेंगे जा रही थी।मिसेस दास का छरहरा शरीर.उनकी लम्बी कद.उनके लम्बे घूँघराले बाल.उनका ढँका तोपा शरीर.उनके स्पर्श.उनकी आँखे.उनकी सौम्यता यकायक मेरी आँखो के सामने जीवन्त हो उठी।

सामने वाले कमरे के मेज पर उनके पति की एक मढी तश्वीर थी और इसी कमरे मे एक काली माई की भी तश्वीर दीवार पर टंगी थी।मै अक्सर देखता था कि बातचीत के दौरान जब तब उनकी नजर अपने पति की तश्वीर पर टिक जाती थी.जैसे उन्हे हर बात की सहमति अपने पति से लेनी हो।

गौहाटी मे ये मेरा तीसरा दिन था।मिसेस दास स्कूल जा चुकी थीं।जयशंकर भी कॉलेज जा चुका था।मै घर पर अकेला था।मै ऐसे ही शहर घूमने निकल पड़ा।घूमते घामते मै स्टेशन तक पहुँच गया।अचानक मेरी नजर एक होटल पर पड़ी.जिसका नाम रायल होटल था।कभी मै बचपन मे अपने ममेरे भाईयों से सुन रखा था कि बगल वाले गाँव के एक बाबू साहब का गौहाटी रेल्वे स्टेशन के समीप एक होटल है।मै इन बाबू साहब से न कभी मिला था और न उन्हे देखा था।मै न तो उनका नाम जानता था न उनके गाँव का.पर मुझे ये पता था कि बिहार प्रदेश के शाहाबाद जिले के बाबू साहब अपने नाम के पीछे राय लिखते हैं।उनका कहना है कि अन्ग्रेजो के लिए राव शब्द का उच्चारण बड़ा कठिन था।उन्होने ही उन्हे राव से राय बना दिया।होटल वाकई मे बड़ा शानदार था।लान्ज मे ही मैने एक बैरे को रोक कर पूछाःइस होटल के मालिक राय साहब हैं क्या!

ःहाँ जग बिहारी राय

ःवो शाहाबाद जिले के रहने वाले हैं!

ःबेसक लेकिन इहाँ कवनो जगह खाली नही है।

ःनही नही मै यहाँ कोई काम ढूँढने नही आया हूँ।सिर्फ उनसे जाके ये कह दो कि मै चिलहरी के कौशल किशोर राय का नाती हूँ और उनसे मिलना चाहता हूँ।

थोड़ी देर बाद वो मुझे होटल के एक कमरे तक पहुँचा आया.जहाँ बाबू साहब अपने बेड पर एक सैन्डो की बनियान और हॉफ पैन्ट पहने नाश्ता कर रहे थे।गले मे सोने की एक मोटी चैन.कलाई पर एक गोल्ड प्लेटेड घड़ी नही घड़ा.बगल वाली तिपाई पर व्हिस्की की एक खाली बोतल.ट्रीपल फाईव का का खुला पैकेट.सुनहरे रंग का एक लाईटर और एक गोल्डेन फ्रेम का चश्मा पड़ा था।बाबू साहब टोस्ट और आमलेट का नाश्ता कर रहे थे।काफी की घूँट ऐसे लगाते थे जैसे तुलसी का कहवा पी रहे हों।बड़े अनमने ढंग से वो मुझसे कुछ पीने को पूछे और उतने ही अनमने ढंग से मेरे नाना का हालचाल पूछेःसुना हूँ कि तहसीलदार साहब के घर मे दू ठो बटवारा हो गया है।हैसियत कम हो जाती है।

मुझे ऐसा लग रहा था कि जग बिहारी राय को बस एक डर खाये जा रहा था कि कहीं मै उनसे कोई मदद न माँग बैठू।इस कमरे मे दो मिनट भी बैठना मुझे पहाड़ सा लगा।संक्षेप मे मै उन्हे अपने ननिहाल का हाल चाल बताकर उन्हे कोसता कमरे से बाहर निकल पड़ाःभोंदू हाथी बिहारी बकचोद ढंग से हिन्दी तक बोलना न आया।दो पैसा क्या कमा लिया अपनी औकात भूल बैठा।

बाद के दिनो मे मुझे पता चला कि ये जमीनदार साहब अपने गाँव मे बस दो बीघे जमीन के मालिक हैं.जिसे समवेत उनका बड़ा भाई नन्द बिहारी राय जोतता है और बैलों के पीछे खुद ही डंडे कोचता है।

जयशंकर के पास बस दो जोड़ी कपड़े थे।उसके कपड़े मिसेस दास ही धोती थीं और उनपर आयरन भी वो अपने हाथों से करती थीं।सामने वाले कमरे की मेज उसके पढने लिखने की थी.पर उसकी साफ सफाई वो खुद ही करती थीं।मै उन्हे माँ कहके भी पुकार सकता था.पर मै उनके ममता का एक अल्पांश तक न चुराना चाहता था।जयशंकर यूँ तो थोड़े लापरवाह तबीयत का लड़का था.पर उसे ये पता था कि उसकी माँ के सारे सपने उसी से शुरू और उसी मे खत्म होते हैं।मिसेस दास हमारी मसहरी ठीक करने आई।मै अभीं भी जगा था

ःनींद नही आ रही है!

ःनही माँ के बारे मे सोच रहा था

ःतुम्हे भूख तो नही लगी है!तुम खाना बहुत कम खाते हो।मेरे हाँथ का खाना अच्छा नही लगता!

मै उठ कर बैठ गया...

मिसेस दास मेरा मन घबरा रहा है।मै आप के कमरे मे आऊँ!

ःआओ मै अपने और तुम्हारे लिए दो कप चाय बनाती हूँ।

फिर मै उन्हे अपने और अपने परिवार के बारे मे रात के एक बजे तक सुनाता रहा और बार बार उन्हे धनबाद या फिर बनारस आने का न्योता देता रहा।

पूरे देश मे बंगाल ही एक प्रदेश है.जहाँ सिर्फ देवियाँ पूजी जाती है।देवताओं को यहाँ स्वीकारा न गया।इस प्रदेश मे एक अलग संस्कृति पनपी.एक अलग समाज उभरा।देवियों के डर से नारियो को पुरूषों से ज्यादे सम्मान मिला।पुरूष वर्ग के वो लोग जो नारियो को सम्मान न दे पाए.निकम्मे होते चले गए और जो सम्मान दे पाए.कला और साहित्य की ओर झुके।इस संस्कृति का जिस प्रदेश मे भी विस्तार हुआ.वहाँ मुझे बड़ी सशक्त नारिया

टकराई। नारियॉ ऐसे भी सशक्त है चाहे वो जहॉ की भी हों। जिस किसी ने इनकी सत्ता को ठुकराया उसके सामने बस एक ही विकल्प बचा. मर्दानगी का एक झूठा दंभ. जहॉ से अलग अलग पगडंडिया शुरू होकर किसी एक घने जंगल मे खो जाती हैं।
एक बार मास्को मे मैने अलेक्सान्दर ब्लाक की एक कविता पढी थी. जिसका सारांश थाःजिसके मन मे नारियो के लिए सम्मान नही है. वो चरित्रवान नही है। ये मेरे लिए आज तक एक ब्रम्ह वाक्य है।
एक दिन गौहाटी के गॉधी पार्क मे मेरी मुलाकात एक बड़े ही रहस्यमय व्यक्ति से हुई। वो एक बैंच पर बैठे अन्ग्रेजी की कोई अखबार पढ रहे थे। मै जाकर उनके बगल मे बैठ गया। उन्होने सूती की एक लुंगी पर सिल्क की एक कमीज पहन रखी थी। पैरों मे एक ढंग की चप्पल और ऑखो पर एक गोल्डेन फ्रेम का चश्मा। देखने दाखने मे तो वो मुझे बड़े सम्पन्न से लगे। उनके दाई कनपटी पर एक ताजे चोट का निशान था। परिचय के बाद वो अपने दो चार चोट मुझे और दिखाये। उनका पूरा नाम शिव कुमार शर्मा था। वो देहरादून के रहने वाले थे. पर चाय का धन्धा दार्जिलिंग मे करते थे। ब्यापार के सिलसिले मे उनका अक्सर गौहाटी आना जाना होता था। दो दिन पहले गौहाटी से दो तीन स्टेशन पहले रात के ग्यारह बजे ट्रेन मे एक सशस्त्र डकैती पड़ी। उन्हे अपने सारे सामानो से तो हॉथ धोना ही पड़ा. उनके हजारो रूपये तक लूट लिए गए। उन्हे कई चोटें भी आई. जिन्हे मै देख चुका था। डकैतों का तो पता न चल पाया. पर एक मद्रासी के घर पर उन्हे शरण मिल गई. जो गौहाटी मे एक पेट्रोल टंकी का मालिक था। उसी ने मिसेस शर्मा को इस हादसे की खबर दी। मिस्टर शर्मा के फर्म का ही कोई कर्मचारी पैसों के साथ आज ही रात को एक बजे के आसपास गौहाटी पहुँचने वाला था। मै उनकी पूरी कहानी तन्मय होकर सुना। अब अपने बारे मे कुछ बताने मे मुझे बड़ी झिझक हुई। हम दोनो की कहानियॅा एक ही जैसी थीं। जब मै उनकी बातों का विश्वास न कर पाया तो वो भला मेरी बातो का भरोसा क्यों करते। उन्हे मै बस इतना ही बताया कि गौहाटी मे मै अपने एक दोस्त से मिलने आया हूँ।
उनके पास पनामा सिगरेट की एक लगभग भरी पैकेट थी। एकाध मैने भी फूकी। उन्होने मुझे फिर एक कैफे मे आमंत्रित किया. जहॉ हम समोसे के साथ काफी पीये। वहॉ उन्होने मुझे बताया कि जिस मद्रासी के घर वो ठहरे हैं. लखपति आदमी है। पैसे को पैसा नही समझता। मै घर से बाहर निकला नही कि जेब मे सौ दो सौ रूपये ठूँस देता है। दिन भर अपने पूजा वाले कमरे मे पता नही किन किन कल्लूओं के सामने चन्दन घिसता रहता है और लक्ष्मी जी साले के ऑगन मे रूपये बरसाती रहती हैं। मै एक बार फिर चौंका।
ःऔर तुम अपने दोस्त से मिलने आए हो!
मैने हॉ मे अपनी गर्दन हिला दी।
ःक्या करता है तुम्हारा दोस्त!
ःबी एस सी कर रहा है सर
ःउसके मॉ बाप मालदार हैं!
ःनही वो एक विधवा मॉ का इकलौता बेटा है। मॉ एक प्राइमरी स्कूल मे टीचर है। फिर मैने उन्हे मिसेस दास के बारे मे थोड़ा बहुत संक्षेप मे बताया। कैफे के बाहर अचानक शर्मा जी मुझसे पूछे
ःआज शाम को तुम क्या कर रहे हो!
ः कुछ खास नहीं।
ःतुम नौ बजे के आसपास मुझसे शहर मे कहीं मिल सकते हो!
ःपर कहॉ! गौहाटी मै पहली बार आया हूँ।
शर्मा जी सोच मे पड़ गए...
ऐसा करो तुम आज मेरा इन्तजार रात के नौ बजे गौहाटी स्टेशन के पुल पर करना. जो सारे प्लेटफार्मो को जोड़ती है। अब मुझसे तुम क्यों और किसलिए न पूछना। समय से पहुँच जाना। मेरे पास शायद उतना समय न होगा।
शंकाओं की एक अच्छी खासी धून्ध शर्मा जी मेरे अगल बगल छोड़ गए थे।
मै वापस घर आया। मिसेस दास खाना बना रहीं थी। जयशंकर उनकी मदद कर रहा था। मुझे देखते ही जयशंकर कहने लगा. अगर तुम आने मे थोड़ा और देर करते तो मॉ मुझे तुम्हारी खोज मे पठाने ही वाली थीं। दोपहर का खाना भी तुम नही खाये। मै माफी मॉगकर हॉथ मुँह धोने चला गया। मेरे दिमाग मे बस एक ही सवाल कुन्डली मारे बैठा था कि मिसेस दास को कौन सी कहानी गढ के सुनाऊॅ. ताकि वो निश्चिंत मुझे शर्मा जी से मिलने की अनुमति दे दें।
हॉथ मुँह धो कर मै बरामदे मे आ गया और आ कर चौकी पर चुपचाप बैठ गया। इस शर्मा से मेरा कोई कल्याण होने वाला है. ये भनक तो मुझे थी. पर मै मिसेस दास को कौन बहाना गढ कर सुनाऊॅ। ये कब तक अपने झाल खाने से मुझे दशत लगवाते रहेंगे। समोसे का स्वाद जीभ से उतरने का नाम ही न ले रहा था। शाम का खाना मै बड़े बेमन से खाया। इन बंगालियों को बागुन. लऊकी के ऊपर कुछ समझ मे ही न आया। भालो लागछे भालो लागछे सुन सुन कर मेरे नाक मे दम आ गया था। शरणार्थियों को एक फटी गमछी मिली नही कि वो रजाई की मॉग करने लग पड़ते हैं। इसका ख्याल आते ही मै समान्य हो गया और आलू के छिलके की भूजिया भालो लागछे कहके खाने लग पड़ा। मिसेस दास को खुश करने के ख्याल से मैने उनसे बोला भी ःमिसेस दास आपनार हाथेर काछे बेसुन सुवाद। मिसेस दास हॅसने लग पड़ी ःतुम्हारी भाषा बड़ी मधुर है प्रमोद. खासकर तब जब तुम बंगाली बोलते हो।
खाने के बाद मैने मिसेस दास को अपनी गढी कहानी सुना दीःआज अचानक शहर मे मुझे मेरे ननिहाल का एक आदमी मिला। स्टेशन के पास ही उसका अपना एक निजी होटल है। मुझे उससे आज नौ बजे मिलने जाना है।
मिसेस दास चौंकी. इतनी रात मे क्यों!
इस सवाल का जवाब मेरे पास थाःहोटल के कामों मे वो दिन भर बिजी रहते हैं। उनके पास समय नही होता।
ःठीक है तुम जयशंकर को साथ ले लो। वो फिर भी लोकल है। गौहाटी इतना सेफ नही है। इतनी रात मे मै तुम्हे अकेले कही भी जाने की अनुमति नही

दे सकती।
मैने इसका भी हल निकाल ही लियाःमिसेस दास मै बच्चा थोड़े ही हूँ जो आप इतना घबरा रही हैं।हो सकता है कि अगला कुछ खाना वाना भी आफर करे और वो मेरा रिश्तेदार भी तो नही है।अच्छा नही लगता किसी को बिना आमंत्रण के साथ ले जाना।मेरी बात सुनकर मिसेस दास के पेशानी पर बल तो पड़े.पर उन्हे मेरा कहा युक्तिसंगत लगा।
ःठीक है समय से तैयार हो जाना।मै एक रिक्सा तुम्हारे लिए तय कर दूँगी।वो तुम्हे वापस भी ले आएगा।मुझे कई रिक्सेवाले जानते हैं।
मेरी जान मे जान आई।
ठीक साढे आठ बजे मिसेस दास एक रिक्सेवाले को बुलवा लाई।हम स्टेशन की ओर बढ चले।स्टेशन के सामने वो मुझे उतार कर कहाःमै अपना रिक्सा स्टैंड पर लगाकर स्टेशन के सामने आप का बाट जोहूँगा।
नौ बजने मे पॅाच मिनट बाकी थे।अन्दर से मै भी थोड़ा घबराया हुआ था।प्लेटफार्मो को जोड़ने वाली पुल पर आधी गौहाटी अपने चिथड़ो मे लिपटी सो रही थी।पैर रखने को तिल भर भी जगह न थी और ऊपर से धूप्प अन्धेरा।बगल से हर गुजरने वाला ही मुझे पुलिस का जासूस लगता था।ये शर्मा कही किसी षडयन्त्र मे मुझे फॅसाने तो नही जा रहा.सोचते ही मेरे रीढ की हडी तक सिहर जाती थी।अचानक मुझे पुल पर एक आदमी लगभग भागता हुआ आता दिखा।मै पसीने से नहा उठा।इस धूप्प अन्धेरे मे भी शर्मा जी की ऑखे मुझे पहचानने मे धोखा न खाईःये हैं छ सौ रूपये।इन्हे सम्हालो और फटाफट अपना रास्ता नाप लो।मै आनन फानन सारे रूपये अपनी जेब मे ठूॅस कर वहॉ से चल दिया।मेरी किस्मत अच्छी थी कि मुझसे मेरा रिक्सावाला टकरा गया.गोकि उससे मैने एक घन्टे का समय ले रखा था।हम घर की तरफ लौट पड़े।रास्ते भर पुलिस की सिटियॅा और चोर चोर पकड़ो पकड़ो का स्वर मेरी कानो मे गूॅजता रहा।घर पर मेरी असहजता कोई भी भॅाप न पाया।मिसेस दास और जयशंकर दोनो जगे हुए थे।बरामदे के सामने रिक्से के रूकते ही दोनो बरामदे मे आ गएःक्या हुआ इतनी जल्दी वापस क्यों आ गए!
ःवो बिहारी बेवकूफ होटल मे था ही नही।किसी से ये भी पता न चल पाया कि वो वापस कब आएगा।मै उसके नाम एक स्लिप पर यहॅा का पता लिखकर वापस आ गया।कब तक मै उसका इन्तजार करता!आप भी खामखाह यूॅ ही घबरातीं।
ःचाय पीओगे!थोड़ी देर हमारे साथ बैठ लो.बड़ी आत्मीयता से मिसेस दास बोली।मै इतना घबराया हुआ था कि कमरे मे एक भद्दे तार से लटकता पच्चीस वाट का बल्ब भी मुझे किसी फोकस से कम न लग रहा था.जिसकी सारी रोशनी मेरे चेहरे पर ही पड़ रही थी।एक हल्की आहट तक मुझे झकझोर कर रख देती थी।मै ये भी नही चाहता था कि मिसेस दास मेरी असहजता भाप लें।थकावट का बहाना बनाकर बरामदे मे आ गया और अपनी चौकी पर लेट कर एक पतली सी चादर अपने चेहरे तक तान ली।नीद तो मुझे आने से रही।
जब तब मेरी ऑखो के सामने बस एक दृश्य नाच जाता थाः मै गौहाटी के किसी एक खन्डहरनुमा थाने मे मै बैठा हूँ।एक असमिये थानेदार के सामने मिसेस दास अपना ऑचल फैलाए खड़ी हैं।रह रह कर वो अपना रूल उनकी कमर मे कोंचे जा रहा है।थानेदार की खीचीं ऑखे बिना मूछ दाढी के उसका सपाट सा तना चेहरा मिसेस दास का रूप लावर्णय भोगे जा रहा है।वो आसामी मे कुछ बड़बड़ाये जा रहा है.जो मै अच्छी तरह समझ और सुन रहा हूँःतुम्हारे आशिक की लाश तो मै तुम्हे सौंप दूँगा.पर उसके पहले मै तुम्हे रात भर भोगूँगा।विधवा से ज्यादे गरम तो रंडिया भी नही होतीं।
रात भर मै बस करवटें बदलता रहा।रात मे दो तीन बार मिसेस दास मेरी मच्छरदानी ठीक करने आई।मै झट अपनी ऑखे मूँद लेता था।रात भर वही असमिया थानेदार मेरे पैताने खड़ा रहा और मेरा चेहरा घूरता रहा।शर्मा जी तो अपने मदरसिया की तिजोरी मे झाड़ू फिराकर सरक लिए और इस थानेदार को मेरा पता थमा गए।कहीं बाबू जी को दूसरा टेलीग्राम न डालना पड़े.जमानत के लिए।ये छह सौ रूपया अभी तक मेरी दॅायी जेब मे ठूॅसा पड़ा था.जिन्हे सहेजने या चपोतने की मेरे पास हिम्मत न थी।दॅायी तरफ करवट लेते ही मै लेटे ही किसी एक पहाड़ की चोटी पर पहुॅच जाता था.जहॅा से मेरी करवटिया शुरू हो जाती थी।लहू लुहान होकर मै नीचे कही पड़ा होता था।जब मै बॅायी तरफ करवट लेता था.तब मुझे उस थानेदार की कर्कश आसामी सुनने को मिलती थीःक्या ठूॅस रखे हो पाकीट मे!निकालो सारा माल।
सुबह भी होने का नाम न ले रही थी।अन्धेरा छटने का नाम ही न ले रहा था।हे भगवान कब पौ फाड़ोगे! मै रात भर बस यही दुहराता रहा।
आखिरकार सुबह हुई।रात के सारे शोर और कोलाहल भगवान की दया से दब चुके थे।हर दिन की तरह हमारी दिनचर्या शुरू हुई।दस बजे के बाद मै अकेला था।
मै बाहर निकला तो एक नुक्कड़ पर मुझे अपना परिचित रिक्सावाला टकरा गया।उसी के रिक्से पर मै पास के ही एक बाजार मे गया।दो घन्टे के अन्दर मैने तीन सौ रूपये फूॅक डाले।मिसेस दास के लिए मैने एक ऊनी शाल खरीदी और एक ढंग का चप्पल भी।जयशंकर के लिए मैने एक रेडीमेड पैन्ट और कमीज खरीदी।इसके अलावे मैने तरह तरह की मौसमी सब्जियॅा.सेब.नारंगी मिठाईया और एक किलो रोहू मछली भी खरीदी।रिक्सा भरता चला जा रहा था।रिक्सेवाले को भी मैने एक बनियान और जंघिया खरीद दी।मुझसे अपने पैसों का हिसाब मॅागने शर्मा जी तो आने से रहे।
रास्ते भर मै बस यही सोचकर खुश होता रहा कि इतने ढेर सामानों को देख कर मिसेस दास और जयशंकर कितने खुश होंगे.पर ये मेरी भूल थी।जब जयशंकर कॅालेज से वापस घर आया तो सामानो का ढेर देखते ही पूछाःबाबा का पइसा आ गया क्या!
मेरे ना कहने पर वो थोड़ा घबराया फिर!
यार वो मेरे ननिहाल वाला आदमी आया था।जबर्दस्ती मेरे हाथ पर छह सौ रूपये धर गया।मेरे नाना से वापस ले लेगा।तुम मिठाई खाओ न।
जयशंकर बिना कोई प्रतिक्रिया दिखाए अपने कपड़े बदल कर दोपहर का खाना लगाने लगा।मै उसे कुरेदता रहा पर वो बिना एक शब्द बोले सर झुकाए खाना खाता रहा।अब मै थोड़ा सख्त हुआःक्या बात है आखिर!तुम मुझसे सीधे मुँह बात क्यों नही कर रहे!कहॉ गलती हो गई है मुझसे!तुम ये तो नही सोच रहे कि मै ये पैसे कही से डाका डाल कर लाया हूँ।
अब जयशंकर का मुॅह खुलाःये बात नही है।बस तुमने हमारा स्वाभिमान आहत किया है।इतने पैसे खर्च करने से पहले तुम्हे मॅा से बात कर लेनी थी।मॅा को उपहारों से बड़ी घबराहट होती है।
मेरा तो दिमाग ही झनझना गया।बार बार मन करता था कि सारे सामान उठाऊँ और ले जाकर सामने वाले कचरे के पास फेक आऊँ और खुद भी घर

छोड़ दूँ।स्वाभिमान मेरे लिए कोई नया शब्द न था।मै इसका मर्म और इसका आहत होना अच्छी तरह जानता था।मिसेस दास के आने तक घर मे एक अजीब सन्नाटा छाया रहा।जयशंकर चुपचाप उदास अपनी पढाई लिखाई की मेज पर जा बैठा और मै अपना अपराधबोध लिए बरामदे मे आकर एक आसामी पत्रिका उलटने पलटने लगा।
करीब साढे चार बजे मिसेस दास आई और मुझे बरामदे मे देखते ही डपटीःइस ताप मे तुम बरामदे मे क्यों बैठे हो!जयशंकर वापस नही आया है क्या!मुझसे कुछ भी बोला न गया।अब कमरे से सिर्फ जयशंकर की आवाज बाहर आ रही थी।वो आसामी मे पता नही क्या क्या अपनी मॉ को बताये जा रहा था।मै अपने आप को बड़ा तिरस्कृत महसूस कर रहा था।
मिसेस दास कमरे से बाहर निकलीं।मै अपना सिर नीचा किये रोये जा रहा था।वो बढ कर अपने दोनो हॉथो से मेरा चेहरा उठाकर अपने पेट से लगा लीं और मेरी पीठ सहलाने लगी।जब मेरी रूलाई रूकी तो अपने ऑचल से मेरी आखे पोंछ कर कमरे मे ले गई और पीने को एक ग्लास पानी दी।फिर वो सारे सामान खोल कर देखने लगीं।उनके इशारे पर जयशंकर भी अपने कपड़े नापने उठा।पैन्ट और कमीज दोनो उसके नाप के थे।शाल और चप्पल भी मिसेस दास को बड़े पसन्द आए।वो सब्जियॉ और मिठाइयॉ सजा सजा के रखने लगीं।बार बार बस मुझे बस इतना ही सुनने को मिलता थाःइतना क्यों खरीदा!गौहाटी के सारे बाजार कल से उठने वाले थे क्या!
मै खुश था कि कम से कम घर का तनाव थोड़ा कम तो हुआ।
मिसेस दास मछली बनाने बैठीं.पर घर पर प्याज थोड़ा कम था।मै जयशंकर के साथ प्याज लाने बाजार चला गया।वहॉ मैने उसके साथ एक कोला पी और उसे एक चीनार सिगरेट का पैकेट खरीद दिया।आज शाम की मछली मिसेस दास ने थोड़े दूसरे ढंग से बनाई थी।खाने पर वो जयशंकर को बार बार कहे जा रही थी.शंकर तुम अपने पेट के हिसाब से खाना।पर उसके पास अपने मॉ की बातों के लिए कोई समय न था।खाने के दौरान बस वो एक ही बार अपनी नजर उठा कर मॉ को भभकाःमॉ आज की भॉति तुम हमेशा मछली क्यों नही बनाती!
ःजब तुममे किलो भर मछली खरीद कर घर लाने का सार्मथ्य आ जाएगा.तब मै तुम्हे दस भॉति से मछली बना कर खिलाऊॅगी।
घर का वातावरण वाकई समान्य हो चला था.पर मुझे ये पता न था कि गौहाटी मे मेरा ये आखिरि दिन है।घर की रसोई उठने के बाद मेरा बुलावा मिसेस दास के सोने वाले कमरे मे आया।मिसेस दास अपने खटिये पर नजर नीची किये अपने प्लास्टिक के चप्प्लों से खेल रही थीं और जयशंकर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठा छत के पंखे देखे जा रहा था।मिसेस दास ने इशारे से अपने पास बुलाया और मुझे अपने बगल मे बैठने को कहा।बड़ा समय लिया उन्होने अपनी चुप्पी तोड़ने मे।
ःजयशंकर बता रहा था कि तुम्हारे परिचित ने तुम्हे आज छह सौ रूपये दिये थे!
ःहॉ
ःहम पर तुमने कितने पैसे खरच डाले!
ःकरीब तीन सौ रूपये
ःबड़ा खुला हॉथ है तुम्हारा।बाकी के तीन सौ रूपये तो तुम्हारे पास है न!
मैने शेष तीन सौ रूपये जेब से निकाल कर उनके सामने धर दिया।
अब मिसेस दास ने अपना निर्णय संक्षिप्त पर अपने अटल स्वर मे मुझे सुना दिया।तुम कल सुबह जयशंकर के साथ जाकर धनबाद के लिए किसी भी ट्रेन मे अपना रिजर्वेशन करवा लो।तुम्हारी मॉ घबरा रही होंगी।अपने परिचित का पता मुझे लिखवा दो।जब तुम्हारे बाबा का पैसा आ जाएगा.तब मै जयशंकर के हॅाथ ये छह सौ रूपये वापस करवा कर शेष रूपये तुम्हारे बाबा के नाम मनीआर्डर कर दूॅगी।तुम्हे हमपर भरोसा तो है न!
मेरी तो भाषा तक जम गई थी।मुझे पता था कि ये मिसेस दास का अन्तिम निर्णय था.जिसे बदला नही जा सकता था।झूठ को झूठों से कब तक छुपाया जा सकता है!अब मेरे वश का कुछ भी न था।सत्य कोसों दूर भाग चला था।अब उसे मनाना.समझाना और वापस लाना बड़ा मुश्किल था।
मुझे मिसेस दास को एक मनगढंत पता देना ही पड़ गया।
दुर्भाग्यवश मुझे दूसरे दिन एक ट्रेन मे रिजर्वेशन भी मिल गई।मेरी ट्रेन शाम मे सात बजे थी।मै बड़े बुझे मन से घर वापस लौटा।दिन भर मै मिसेस दास की खटिया पर लेटा रहा।दोपहर के खाने के बाद ही जयशंकर और मिसेस दास मेरे विदाई की तैयारी मे लग गए।जयशंकर मेरे लिए एक छोटी सी सुराही खरीद लाया।मिसेस दास दिन भर मेरे रास्ते के लिए पता नही क्या क्या पकाती और बॉधती रहीं।हर दस मिनट पर जयशंकर मुझसे चाय के लिए पूछने आता था।मेरे मन मे एक ऐसा शूल आके फॅस गया था.जो निकाले न निकल रहा था।
स्टेशन पर जयशंकर एक बार अपनी मॉ को रोते देखकर डपटाःमॉ बन्द करो अपना रोना धोना।इतनी लम्बी यात्रा प्रमोद अकेला कैसे कर पाएगा!चार स्टेशन के बाद वो खिड़की से छलांग मार देगा फिर तुम जीवन भर रोते रहना।
ट्रेन अपने नियत समय पर आई।मै मिसेस दास के पॉव छूकर जयशंकर से गले मिल कर अपनी सीट पर जा बैठा।
कुछ दिनो के बाद बाबूजी का भेजा हजार रूपया धनबाद के पते पर वापस आ गया।मनीआर्डर पर मात्र मिसेस दास का पता भर लिखा था।
मेरा ये अक्षम्य झूठ पच्चीस वर्षो तक एक निर्लज्ज घाव की तरह आए दिन पकता.फूटता और रिसता रहा।
मै मिसेस दास के घर के सामने था।घर का नक्शा ही बदला हुआ था।कच्चे बरामदे के आगे एक दीवार और एक लोहे का फाटक।छोटे से अहाते मे यहॉ वहॉ गमले.बरामदे की छत तक फैली बोगाविेयॉ की लत्तरें।एक लिपा पुता आकर्षक घर।
मुझे पता था कि मिस्टर दास का अधूरा सपना बस जयशंकर ही पूरा कर सकता है और उसने पूरा कर के दिखा भी दिया।
फाटक की कुंडी खटखटाने मे मुझे तनिक भी संकोच न हुआ।मै यहॉ किसी तरह की कोई भी उम्मीद लेकर न आया था।बस मुझे मिसेस दास से एक बार मिलना था।खटका सुनकर मिसेस दास कमरे से बाहर निकली।शायद इन पच्चीस वर्षो के बाद भी मुझमे कोई परिवर्त्तन न आया था।उन्होने मुझे देखते ही पहचान लिया।बिना किसी प्रतिक्रिया के उन्होने झट से फाटक खोला और मुझे गले से लगा कर रोने लग पड़ी.फिर मेरा चेहरा अपनी ऑखो के सामने कर के बोलीःतुम तो बिल्कुल अंग्रेजो की तरह गोरे लगते हो।

मै उनके पॉव तक न छू पाया।
मेरा हॉथ पकड़ कर फिर वो घर के अन्दर ले गई।कमरों की साज सज्जा तो साधारण ही थी.पर घर की दीवारें.फर्श और छतें सबकी मरम्मत हुई पड़ी थी।मिसेस दास रत्ती भर भी न बदली थी।न तो उनकी ममता मे और न तो उनकी सौम्यता मे कोई परिवर्त्तन आया था।बस एक परिवर्त्तन मै उनमे देख रहा था:उनके स्वर अब आदेशात्मक न रहे।झुर्रियों मे वो नहा चली थी.पर उनके एक बाल तक नही पके थे।अपनी कद की वजह से वो थोड़ा झुक कर चलती थीं।
ये मेरे लिए बिल्कुल अविश्वसनीय था:एम एस सी करने के बाद जयशंकर ने अपनी मर्जी से एक करोड़पति के लड़की से शादी करके उनसे विलग होकर डिवरूगढ चला गया था।उसने अपने समवेत सम्बन्ध अपनी मॉ से तोड़ डाले.जिसकी मुझे सपनो मे भी कभी आहट न हुई।न चिट्ठी न पतरी.न पता न ठिकाना।मिसेस दास की तंगियों से उसके नाक मे दम आ गया था।मिसेस दास को उसके लिए एक अच्छे घर की बोदी की फिकर रहती थी और अगले को साक्षात लक्खी माई ही टकरा गई।अब तो वो रोहू माछ के संग स्वीमिंग पुल मे तैरता होगा।मान्सो के नाम पर बकरे कटते होंगे।मिसेस दास की बड़ी बहन अब इस दुनिया मे न रहीं।वो अपनी चल और अचल सम्पति मिसेस दास के नाम कर गई जो तकरीबन डेढ लाख रूपये की थी जिसका एक भाग उन्होने अपने घर की मरम्मत मे लगाया और बाकी के सूद और अपनी सीमित पेन्शन से अपना जीवन निर्वाह एक तरह से सम्मानित ढंग से कर रही थीं।
अब वो मेरे लिए मिसेस दास न थीं।मै बंगाली करीव करीव भूल चला था फिर भी उन्हे खुश करने के लिए उनसे बंगाली मे ही बोला:मॉ रोहू माछ बोड़ो इच्छा लागछे।मै उन्हे खुश क्या करता!उनके ऑखो मे तो सावन भादो की बरसात ही शुरू हो गई।वो एक आलमारी मे से मेरी चिट्ठियो का पूरा पुलिन्दा ही उठा लाई :तुम्हारी एक एक चिट्ठी मै अनगिनत बार पढ चुकी हूँ।कई बार सोची कि तुम्हे जबाव लिखूँ.पर शंकर मुझे बिल्कुल तोड़ गया बेटा।जब मेरी अपनी कोख का जनमा बेटा मेरा सगा न रहा तो तुम पर मै कौन सी आस रखती!फिर भी एक प्रश्न मै तुमसे हमेशा ही पूछना चाहती थी।
:कौन सा प्रश्न मॉ!
:तुम्हे ये छह सौ रूपये मिले कहॉ से थे!
अब मुझे उन्हे सब कुछ साफ साफ बताना पड़ा।
सब कुछ सुनने के बाद वो मुझसे पूछीं:और एक बार भी तुम्हारा मन तुम्हे पैसे पकड़ने से पहले न धिक्कारा!
:नहीं
:क्यों नही!
:मुझे अपने मन की फिक्र न थी।मुझे आप के अभाव खलते थे.पर अगर मुझे उन दिनो ये पता होता कि मै अपने उपहारों के बदले आप को खो दूँगा तो मै ये पैसे कभीं न पकड़ता।आप से कभीं झूठ न बोलता।आप का अभाव मुझे अपने जीवन में अपनी मॉ से भी ज्यादे खला।
मिसेस दास चुपचाप उठीं और अपनी सन्दूक से एक खुद का बुना शाल अपने कन्धे पर डाल कर वापस आई
:आओ बाजार चलते हैं।तुम्हे मछली खानी है न!मेरे संग एकाध दिन तो रहोगे न!कितने दिनों की छुट्टी है!
मै उनके संग चार दिन रहा और उनकी ममता की बौछार मे अकेला नहाता रहा।
पॉचवे दिन सुबह से शाम तक वो अपने चौके मे मेरे रास्ते के लिए खाना बनाती रही और मुझे स्टेशन भी छोड़ने आई।पूरे दिन उनसे एक शब्द तक न बोला गया।बात शुरू करने से पहले ही उनका गला रूँध जाता था।
जहॉ तक मेरी बात है:उनकी याद मुझे आई नही कि इतने वर्षो के बाद आज के दिन तक वो मुझे रूलाती रहती हैं।
जब बर्लिन मे मुझे उनकी चिट्ठी मिलती है.तो मै अपना सारा घर सर पर उठा लेता हूँ।कई दिनो तक उनके पत्र का एक एक शब्द मेरे दिमाग मे गूँजता रहता है.विशेष कर उनका पत्र के अन्त मे लिखा:तुम्हारी मॉ मनीषा।मै उन्हे जब पत्र लिखने बैठता हूँ.अनायास मेरी भाषा बच्चो जैसी नटखट और अपरिपक्व हो जाती है।मेरी उम्र घट जाती है।मुझे अपने इर्द गिर्द वर्फ कोहरे या बादल नजर नही आते.बस उनका सौम्य चेहरा ही मुझे हर तरफ नजर आता है।
जब मै सोया होता हूँ मॉ अपने आंचल से सूर्य को ढ़ॅक लेती है.ताकि मै उजाले से जग न जाऊँ।जब मै खेल कर देर से घर लौटता हूँ मॉ सूर्य रथ के पहिये थामे रथ के साथ घिसटती रहती है और कलपती रहती है:थोड़ा सबर तो कर लो।मेरा बेटा अभीं वापस नही आया है।
ये मैने कहीं पढा था और अपनी डायरी मे लिख भी लिया था।
डायरी के इस पन्ने पर मुझे मिसेस दास की बड़ी याद आती है।

मार्च दो हजार पॉच मे सरिता मे अनोखा रिश्ता नामके शीर्षक के तहत प्रकाशित
प्रमोद कुमार सिंह